अमृत प्रार्थना
भगवान से

मन को एकाग्र करके प्रार्थना करेंगे।
हे दयानिधि! हे दीनबंधु! हे अंतर्यामी!हे शरणागत वत्सल !
हम आपकी शरण में आए हैं! हम इस संसार सागर में डूबते, भूले भटके,ना जाने कितने जन्मों से भटक रहे हैं। इस संसार सागर में बड़े-बड़े ग्राह,बड़े-बड़े मत्स हमें बार-बार निगल रहे हैं, हमें पीड़ा दे रहे हैं। अब हमारा उद्धार करें, हमारा कल्याण करें। इसकी कितनी गहराई है हमें पता नहीं! इससे बाहर जाने का मार्ग क्या है हमें पता नहीं!
लेकिन यह मानव का शरीर नौका के समान आपने हमें दिया। क्योंकि चौरासी लाख योनियों में मात्र यह ही एक शरीर है, जिससे भव से पार जाया जा सकता है।
लेकिन शरीर प्राप्त करके भी हम प्रयत्न को नहीं किए।
हमे में सामर्थ भी नहीं कि हम आपने से भवसागर को पार कर सकें।
लेकिन जब आप जैसा खेवैया,आप जैसा नाविक मिल ही जाए।जिस प्रकार आपने महात्मा अर्जुन के रथ को हाँका। जिस प्रकार आपने पहले भी अनंत साधकों को,सिद्धों को, इस भवसागर से पार किया है,हम भी आपकी शरण में आए हैं। यह शरीर रुपी नौका को आपको समर्पित करते हैं!अब आप ही हमें भवसागर से पार करें!हमारा उद्धार करें! *हमारा कल्याण करें!
ॐ शांती शांती शांती !